

असम के मारवाड़ी समुदाय और हिंदी

जाहिदुल दीवान

असम पूर्वोत्तर भारत का सबसे जाना पहचाना राज्य है। इस राज्य की विशिष्ट पहचान जिन कारणों से बनी है, भाषा उनमें से एक अन्यतम कारण है। लेकिन भाषा पर बात करने से पहले कुछ दूसरी जरूरी बातों पर चर्चा करना भी आवश्यक है। तब बात और अधिक स्पष्ट हो पाएगी। कहा जाता है कि असम में हजारों वर्षों से बाहर के लोग आकर बसे हैं। कहीं-न-कहीं यह सिलसिला आज भी जारी है। लेकिन प्रवास के इस लंबे इतिहास में केवल दो ही समुदायों ने लूटने या फतह करने के इरादे से असम में प्रवेश किया था। जाहिर तौर पर वे दोनों समुदाय क्रमशः मुगल और अंग्रेज थे। बाकी जितने भी समुदाय असम में आए उन्होंने कभी असम को छोड़कर जाने का विचार नहीं किया। उन्हीं प्रवासी लोगों ने असम को हर दृष्टि से समृद्ध करने का काम भी किया है। देखा जाए तो प्रवासी लोग वर्तमान असमिया समाज के अविच्छेद अंग बन चुके हैं। आज प्रवासियों के बिना असम की कल्पना करना भी मुश्किल है। लेकिन वर्षों से असम के कुछ प्रवासी लोग विवाद का कारण भी बने हुए हैं। हालांकि यह अपने आप में एक विस्तृत परिचर्चा का विषय है। जिस पर हम अलग से बात कर सकते हैं।

जैसे कि प्रस्तुत लेख के शीर्षक से ही स्पष्ट हो चुका है कि हम असम के मारवाड़ी लोगों के हिंदी भाषा के विकास एवं प्रचार-प्रसार में क्या योगदान रहा है। उस पर चर्चा करने जा रहे हैं। हालांकि यहाँ असम में हिंदी भाषा की स्थिति और मारवाड़ी समाज का उनमें योगदान, इन दोनों पक्षों पर संक्षिप्त विवरण मात्र ही प्रस्तुत किया जाएगा। पहले ही कहा जा चुका है कि जिन कारणों से असम राज्य पूरे भारतवर्ष में पहचाना जाता है उनमें भाषा एक अन्यतम बिंदु है। असम की असमिया भाषा भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल वह भाषा है जिसकी एक समृद्ध परंपरा है। असम के स्थानीय लोग असमिया भाषा में, प्राणों से बढ़कर प्रेम करते हैं। असमिया समाज के लोग अपनी सबसे बड़ी सांस्कृतिक पहचान असमिया भाषा को ही मानते हैं। मैं इन बातों को यहाँ इसलिए दोहरा रहा हूँ क्योंकि इस स्थिति को समझे बिना हम असम के बारे में किसी भी भाषागत विषय पर मुकम्मल बात नहीं कर सकते। चाहे हिंदी हो या कोई दूसरी भाषा, असम में विस्तार के लिए सर्वप्रथम उसे असमिया भाषा से टकराना पड़ता है। इसलिए असम के प्रवासी समुदाय के लोगों को अपनी भाषा में कुछ सोचने- विचारने से पहले असमिया भाषा का भी ख्याल रखना पड़ता है। असम के हिंदी भाषी मारवाड़ी समुदाय भी इस स्थिति से अनजान नहीं हैं।

अहिंदी अंचल असम में प्रारम्भ में हिंदी प्रचार का दायित्व बाबा राघवदास को सौंपा गया था, जो अपने बरहज आश्रम में पहले से ही राष्ट्रभाषा प्रचार में जुटे थे। काका साहेब कालेलकर तथा अन्य राष्ट्रनेताओं ने इस अंचल का दौरा किया। उन्हीं दिनों असम में सुचारू रूप से हिंदी प्रचार हेतु एक संस्था बनाने का उद्योग भी होने लगा था। असम के लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै हिंदी के बड़े पोषक व समर्थक थे। काका साहेब कालेलकर की उपस्थिति में सन् 1936 ईसवी में गुवाहाटी में गोपीनाथ बरदलै की अध्यक्षता में हिंदी

प्रचार समिति की स्थापना हुई। आगे चलकर इसका नाम 'असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' पड़ा। असम के डिब्रूगढ़, 'जोरहाट', 'शिवसागर', 'बरपेटा' आदि अंचलों में हिंदी शिक्षण होने लगा। गुवाहाटी में राष्ट्रभाषा प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रभाषा शिक्षण मंदिर' खोला गया जिसके प्रधानाचार्य के रूप में एक बहुत ही सुयोग्य व्यक्ति कमलनारायण आये थे। राष्ट्रभाषा शिक्षण के अलावा उन्होंने हिंदी असमिया के साहित्यिक समन्वय के लिए भी कदम उठाया था।

असम के विकास में मारवाड़ी लोगों ने इतना योगदान दिया है जिसकी कोई तुलना नहीं है। मारवाड़ी लोग हिंदी भागी होते हैं जिनकी मातृभाषा राजस्थानी हिंदी है। राजस्थान, हरियाणा, मालवा तथा उसके निकटवर्ती भू भागों के रहन- सहन, भाषा तथा संस्कृति वाले सभी लोग जो स्वयं अथवा उनके पूर्वज देश या विदेश के किसी भू भाग में बसे हों, वे मारवाड़ी कहलाते हैं। यह परिभाषा आज तक मानक रूप में स्वीकार्य है। देश का कोई ऐसा प्रान्त नहीं है जहाँ मारवाड़ी नहीं गए हों या आज भी नहीं बसे हों। इन प्रवासी लोगों में एक बहुत बड़ी संख्या ऐसी है, जिसका मारवाड़ से कोई ताल्लुक नहीं है। प्रश्न उठता है कि फिर वे मारवाड़ी क्यों कहलाये ? उत्तर बहुत स्पष्ट है। वे सभी लोग मारवाड़ी भाषा बोलते थे और जहाँ भी गये, उन्होंने अपना परिचय मारवाड़ी के रूप में दिया। इसीलिए राजस्थान से किसी भी रूप में जुड़े हुए हर व्यक्ति मारवाड़ी कहलाए। आज से चार सौ वर्ष पहले शायद राजस्थान या राजस्थानी शब्द ही नहीं बने होंगे। अतः खुद के परिचय के लिए राजस्थानी शब्द की जगह मारवाड़ी शब्द का प्रयोग किया जाता रहा।

मारवाड़ शब्द संस्कृत के मारुवाट का अपभ्रंश माना जाता है। प्राचीनकाल में यह मरुप्रदेश कहलाता था। कारण भौगोलिक दृष्टि से इसका विशाल इलाका मरुभूमि, रेगिस्तान ही था। माड़वाड से मारवाड़ी शब्द की उत्पत्ति हुई है। ऐतिहासिक सूत्रों से पता चलता है कि मारवाड़ी व्यापारियों का बंगाल में सन् 1564ई. में आगमन हुआ था। कालक्रम में उनका व्यापार स्थानीय लोगों से जुड़ने लगा और लोग उन्हें मारवाड़ी नाम से संबोधित करने लगे। मारवाड़ी शब्द का प्रयोग सिर्फ व्यापारियों के लिये होता हो ऐसा नहीं है वरन् जो भी व्यक्ति मारवाड़ी भाषा, वेशभूषा, खानपान, रीति- रिवाज आदि को मानते हैं उन्हें भी मारवाड़ी कहा जाता है। असम में मारवाड़ी शब्द एक विनिर्दिष्ट समुदाय को दर्शाता है जिनके पूर्वज किसी समय मारवाड़ (जोधपुर) नामक स्थान से इस राज्य में आकर बसे थे। शुरु-शुरु में मारवाड़ी शब्द केवल मारवाड़ के निवासियों के लिए ही प्रयोग किया जाता था लेकिन समय के चलते इस शब्द का अर्थविस्तार हो गया। विशेषतः सिकर, उदयपुर आदि स्थान की भाषा- संस्कृति के साथ सामंजस्य रखने वाले राजस्थान के पास के हरियाणा जैसे स्थान से आनेवालों को भी वृहत् मारवाड़ी समुदाय के अन्तर्गत माना जाता है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार श्री गौरीशंकर हीरा चन्द ओझा ने कहीं लिखा है, 'मारवाड़' शब्द देशवाची, लोकवाची एवं संस्कृतिवाची है। राजपूताना के लोगों को हिन्दुस्तान में मारवाड़ी ही कहते हैं। राजपूताना से बाहर जाने वाले लोग अपने पहनावे, रहन सहन, व्यवहार और व्यापार आदि में समानता के कारण राजस्थान से बाहर कलकत्ता, मुंबई आदि भारत के सभी स्थानों में मारवाड़ी कहे जाते हैं। भले ही वे राजस्थान में जोधपुर, बीकानेर अथवा जयपुर के या अन्य किसी राज्य के निवासी ही क्यों नहीं।

आहोम राजा गौरीनाथ सिंह (1780-1794 ई.) और अंग्रेज कैप्टन वेल्स के साथ एक समझौता हुआ था जिसके तहत अंग्रेज व्यापारियों को भारतीय व्यापारियों के साथ असम में व्यवसाय करने की अनुमति मिली थी। इन व्यापारियों में अगरवाला और मारवाड़ के ओसवाल तथा ढाका के मुसलमानों के भी शामिल होने का प्रमाण मिलता है। राजा कमलेश्वर सिंह (1795-1810 ई.) के शासनकाल में असम के कई स्थानों पर बंगाली और मारवाड़ी व्यापारियों की दुकानें चलने का उल्लेख मिलता है। ऐतिहासिक प्रमाण व साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि मारवाड़ी लोग पिछले दार्द-तीन सौ वर्षों से असम में कार्यरत हैं। इस कालखण्ड के पहले भी मारवाड़ियों के असम प्रदेश में मौजूद होने का दावा किया जाता है। लेकिन इसका कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। सत्रहवीं शताब्दी में मुगल सैनिकों के साथ मारवाड़ियों के आने की बात का उल्लेख साहबुद्दीन तालेश की 'तारिख ए असम' में मिलता है जिसमें कुछ राजपूत सेना अधिकारियों के असम में निवास करने का उदाहरण मौजूद है।

राजस्थान से रोजगार की तलाश में असम आए एक मारवाड़ी परिवार ने असमिया जाति को नयी बुलंदियाँ प्रदान की। हम बात कर रहे हैं रूप कुंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला के परिवार की। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि अंग्रेजों के शासन काल में ही राजस्थान से आये केडिया परिवार ने असम में न सिर्फ रोजगार के साधन जुटाये, बल्कि असमिया साहित्य, कला, संस्कृति को अपने महत् योगदान से लबरेज कर दिया। स्व. ज्योतिप्रसाद अगरवाला को असमिया जाति का पुरोधा मानकर पूजा जाता है। यह बात नहीं है कि विगत दो शताब्दियों में सिर्फ ज्योतिप्रसाद का परिवार ही राजस्थान से आकर असम में स्थायी रूप से रचा-बसा हो। ऐसे हजारों परिवार हैं, जो रोजगार की तलाश में असम आये तथा पूरी तरह यहाँ रच-बस गये। आज उनकी कई पीढ़िया यहाँ गुजर चुकी हैं। लेकिन उनमें से ऐसे परिवार गिने-चुने ही हैं। जिनको ज्योतिप्रसाद के परिवार सरीखा मान सम्मान, प्यार हासिल हुआ हो। आखिर ज्योतिप्रसाद के परिवार में ही ऐसा क्या था कि आज हर असमिया उन्हें न सिर्फ अपना मानता है. बल्कि अपना पुरोधा मानकर पूजता भी है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी ज्योतिप्रसाद अगरवाल एक नाटककार, कथाकार, गीतकार, पत्र संपादक, संगीतकार तथा गायक सभी कुछ थे। मात्र 14 वर्ष की उम्र में ही 'शोणित कुंवरी' नाटक की रचना कर आपने असमिया साहित्य को समृद्ध कर दिया। 1935ई. में असमिया साहित्यकार लक्ष्मीकांत बेजबरूआ के ऐतिहासिक नाटक 'जयमति कुंवरी' को आधार मानकर प्रथम असमिया फिल्म बनाई। वे इस फिल्म के निर्माता, निर्देशक, पटकथाकार, सेट डिजाइनर, संगीत तथा नृत्य निर्देशक सभी कुछ थे। ज्योति प्रसाद ने दो सहयोगियों कला गुरु विष्णु प्रसाद राभा (1909-69) और फणि शर्मा (1909-69) के साथ असमिया जन संस्कृति को नई चेतना दी। यह असमिया जातीय इतिहास का स्वर्ण युग है। ज्योतिप्रसाद की संपूर्ण रचनाएँ असम के सरकारी प्रकाशन संस्थान ने चार खंडों में प्रकाशित की हैं। उनमें 10 नाटक और लगभग उतनी ही कहानियाँ, एक उपन्यास, 20 से ऊपर निबंध, तथा 359 गीतों का संकलन है। जिनमें प्रायः सभी असमिया भाषा में लिखे गये हैं। तीन-चार गीत हिंदी और कुछ अंग्रेजी में नाटक भी लिखे गये हैं। असम सरकार प्रत्येक वर्ष 17 जनवरी को ज्योतिप्रसाद की पुण्यतिथि को शिल्पी दिवस के रूप में मनाती है।

स्वतंत्रता के पूर्व जब गांधी जी पूरे भारतवर्ष में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे तभी 1923 ई. में गुवाहाटी शहर के कुछ युवकों ने इस अहिंदी भाषी प्रांत में, जहाँ हिंदी के नाम पर या तो एक मिडिल स्कूल चल रहा था या फिर दो-चार लोग बाहर से हिंदी के अखबार मँगा रहे थे, में हिंदी के प्रचार-प्रसार का सपना देखा। स्व. पंडित श्री केसर देव शर्मा, स्व. जगदीश जी सांगानेरिया, स्व. देवी दत्त जी सांगानेरिया, स्व. राम प्रसाद जी जालान, स्व. बालूराम जी आदि ने मिलकर गुवाहाटी के फैंसी बाजार स्थित श्री गोविंद जी ठाकुरबाड़ी में ही एक हिंदी पुस्तकालय की शुरुआत की (जिसका नाम बाद में 'श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय' पड़ा) में आरंभ में बहुत थोड़ी सी पुस्तकें जो प्रायः इन्हीं लोगों द्वारा प्रदत्त थी। आज इस पुस्तकालय में हजारों की संख्या में हिंदी पुस्तकें मौजूद हैं। हिंदी के प्रति समाज में रुझान पैदा करने के उद्देश्य से यह पुरतकालय पिछले कई वर्षों से लगातार एक बड़े कवि सम्मेलन का आयोजन जनवरी माह में करता आ रहा है जिसमें करीब 1200 श्रोता सक्रिय सहभागिता करते हैं। सन् 2013ई. से पुस्तकालय में एक द्विवार्षिक सज्जन जैन स्मृति साहित्य पुरस्कार भी दिया जा रहा है जो कि पूर्वोत्तर में हिंदी के क्षेत्र में सर्वाधिक कार्य करने वाले व्यक्ति को दिया जाता है।

असम के वरिष्ठ पत्रकार व संपादक घीसा लाल अग्रवाल को पूर्वोत्तर में हिंदी पत्रकारिता का गुरु माना जाता है। बता दें कि वे जीएल पब्लिकेशंस प्रबंध के निदेशक सह अध्यक्ष रहे हैं। इसके तहत हिंदी अखबार 'पूर्वांचल प्रहरी', असमिया अखबार 'आमार असम', अंग्रेजी दैनिक 'द नॉर्थ ईस्ट टाइम्स' और मेघालय राज्य के लिए एक अलग अंग्रेजी दैनिक 'द मेघालय गार्जियन' का प्रकाशन हो रहा है। पब्लिकेशंस के अध्यक्ष घीसा लाल अग्रवाल ने असमिया भाषा और संस्कृति के विकास में महती योगदान दिया। उनका जन्म बरपेटा जिले में सन् 1940ई. में हुआ था। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में छगनलाल जैन अग्रणी माने जाएंगे। उन्होंने 1950ई. में 'पूर्वज्योति' नामक हिंदी मासिक समाचार पत्र प्रारंभ किया था। यही पूर्वज्योति बाद में साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होने लगा। यह साप्ताहिक समाचार पत्र करीब ढाई दशक तक असम के बारे में हिंदी भाषी लोगों को जानकारी प्राप्त कराने का महत्वपूर्ण साधन था। छगनलाल जैन ने शंकरदेव द्वारा रचित कीर्तन और नामघोषा का हिंदी भाषा में अनुवाद कर आकाशवाणी दिल्ली केंद्र से प्रसारित करवाकर असम की महापुरुषीया धर्म-संस्कृति के प्रचार के क्षेत्र में एक महान कार्य किया था। असम और असमिया साहित्य सभा के प्रति उनकी अगाध निष्ठा थी। असमिया साहित्य-संस्कृति के विकास में असम के कई हिंदी भाषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनमें कई लोगों ने हिंदी और असमिया दोनों के साहित्य-संस्कृति के समन्वय सेतु के रूप में अपनी अहम भूमिका निभाई। इनमें से कुछ लोग असम में ही रह गए तो कुछ लोग कुछ समय के बाद अपने प्रदेश वापस लौट गए, लेकिन उनका रचनात्मक कार्य असम में हिंदी-असमिया भाषा के समन्वय सेतु के रूप में मील का पत्थर साबित हुआ।

असम में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन तथा पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच नामक दो स्थापित संगठन हैं। जिन्हें असम के मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधि संगठन माना जाता है। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन मारवाड़ी समाज के प्रबुद्ध व प्रतिष्ठित लोगों का संगठन माना जाता है। ये संगठन विगत कई दशकों से पूर्वोत्तर में अपनी गतिविधियाँ चला रहे हैं। असम के मारवाड़ी समुदाय तथा स्थानीय असमिया

के बीच की दूरी मिटाने के काम की सबसे अहम जिम्मेदारी पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन पर ही है। लेकिन इस संगठन को आज भी असम क्षेत्र में कई ठोस काम करने बाकी हैं।

संदर्भ- सूची

HATICHUNG Dr. Ranajit Sabhapandit- 2020- PRABAS PRABRAJAN ANUPRABESHAR
CHAKRABEHUT ASOM GUWAHATI SUN BEAM

SIVANATH BARMAN- 2013 SWADESH SWAMAT

PANBAZARI GUWAHATI& 1% BANDHAV UMESH KHANDELIYA-2019. ASOMOR MARWARI
SAMAI DHEMAJI] ASSAM DHEMAJI ZILA SAHITYA SABIA & MARWARI SAMMELAN) DHEMAJI
BRANCH कांता अग्रवाल. 2021 जनवरी फरवरी, श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय:एक विरासत." पुस्तक
संस्कृति 24.

गोपाल जालान, जनवरी 2010. "मारवाड़ी सम्मेलन और असम साहित्य सभा।" समाज विकास 29-30.

विकिपीडिया, 2022. ज्योतिप्रसाद आगरवाला. 16 जनवरी. इस दिन देखा गया 20 अप्रैल 2022.

https://en.wikipedia.org/wiki/16_January

शांति संपादक मंडल. 2016. पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की दशा और दिशा. नवा वाडज, अहमदाबाद, गुजरात
शांति प्रकाशन.

लेखक का परिचय एवं पता: डॉ. जाहिदुल दीवान (पोस्ट डॉक्टरेट)

कमरा नं. 32, 52 ए/2 करतार सिंह टोकस बिल्डिंग

बुद्ध विहार, मुनिरका नई दिल्ली- 110067